शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

हिंदी दलित कहानियों में आम आदमी

डॉ० राजेंद्र घोडे
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय
पुणे

प्राप्तिः 22.02.2022
स्वीकृतः 15.03.2022

घुटे माधव रमेश
पीएच.डी, शोधछात्र
ईमेलः *tejumadhav2@gmail.com*

सारांश

आम आदमी का अर्थ है सामान्य व्यक्ति जो आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि सभी परिस्थितियों, से पीड़ित है। इसमें मजदूर खेतीहर घुमंतू, आदिवासी आदि आते हैा इन लोगों को यह कहानी नायक हुई उसके सुख–दुःख उजागर करने के लिए छटपटाती है। उसकी पीड़ा, तड़प कुंठा को प्रकट करने का प्रयास करती है। प्राचीन काल में लिखी हुई कहानियों के नायक राजा, महाराजा आदि हुआ करते थे। लेकिन 1975 के बाद सभी कहानियों के विषय एवं नायक बदलते हुए दिखाई देते है। दलित कहानियों के विषय या नायक आम आदमी के अस्तित्व के लिए लडने वाले नायक दिखाई देते हैं। जो आम आदमी इस समाज व्यवस्था में समाज की निर्मिती एवं विकास का एक हिस्सा है। इसलिए रामदरश मिश्र जी ने आम आदमी की कहानी के बारे में कहा है– ''आम आदमी की कहानियाँ प्रमुख रूप से आम आदमी जिसमें इन मध्यवर्ग और निम्नवर्ग दोनों ही शामिल हैं। यह अर्थमूलक यथार्थ को उद्‌घाटित करती है। अर्थमूलक यथार्थ की दुनिया सरल दुनिया नहीं है, बहुत जटिल है। इसमें राजनीति, धर्म, सामाजिक व्यवस्था संबंध मूल्य सभी सम्मिलित हैं। ये कहानियाँ किसी तटस्थ दृष्टि से यथार्थ को उद्‌घाटित नहीं करती, वरना अपनी पक्षधरता भी व्यक्त करती है।'' इस तरह दलित कहानी आम आदमी का संघर्ष, पीड़ा, विद्रोह आदि को उजागर करके सामाजिक बदलाव की आहट भरना चाहती है। इसलिए इन कहानियों का परिवेश रोमाँटिक न होकर संघर्षरत जीवन के आस–पास का परिवेश है। चरित्र धूमिल और रहस्यमय नहीं है। इन पात्रों का संघर्ष समाज व्यवस्था के लिखाफ अपने अस्तित्व, न्याय और हक के लिए है।

मुख्य बिन्दू

संघर्ष, दलित, अस्तित्व, पीड़ा, न्याय, भेदभाव, समाज व्यवस्था, राजनीति, विद्रोह आदि।

दलित साहित्यकारोने आम आदमी को अपनी रचनाओं का नायक बनाकर उन्हें न्याय दिया है। हम इन्सान होते हुए भी हमें इन्सान की तरह जीवन क्यों नहीं जीने दिया जाता इस प्रकार के सवाल अनेक पात्रों के माध्यम से उन्होंने उठाए हैं। रामनिहोर विमल की कहानी 'घायल शहर की एक बस्ती' में हरिया नायक है जो एक सामान्य व्यक्ति है उसके पीड़ा की अभिव्यक्ति इसमें हुई है। हिंदु–मुस्लीम दंगों के कारण दलित बस्ती में बेवजह कितनों की जान चली जाती है जिसमें नायक हरिया की भी पुलिस की गोली लगने से मौत हो जाती है। 'परनाम नेताइन जी' इस कहानी में रमणिका गुप्ता जी ने चित्रित किया है कि गाँव में ठाकूर, मुखिया, जमींदार आदि सवर्ण लोगों को

प्रणाम, अभिवादन करने की प्रथा पहले से ही चली आ रही थी। समाज में कोई अनजाने में या जान बुझकर यह परंपरा तोड़ना चाहता है या तोड देता है जो उस समाज के मनुवादी लोग हिंसक प्राणियों का रूप धारण कर लेते है। इसका जीता–जागता एवं ज्वलंत उदाहरण हमें इस कहानी में वकील की माँ जो नायिका है उसके माध्यम से मिलता है। उसके घर सुंदरसिंह जमींदार जब आता है। उसी दिन वकील हजारीबाग से लौटा थाद्य किताब में से पढ़कर माँ को कुछ सुना रहा था। का है बाबू? आज वकील की माँ ने खटिया पर बैठे–बैठे जवाब दिया था। वकील के बापू ने भी पहले की तरह बाबू को देखते ही खटिया से उठकर खड़े होकर सलाम नहीं किया था। वकिल बाबू ने भी बाबू साहब के पाँव छूने के लिए झुकने की कोशिश नहीं की थी इसलिए जमींदार ने अपने साथियों के साथ मार पीट करते हुए अछूत बसती को जला दिया। इस घटना को लेकर वकील की माँ पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज करते हुए कहती है– ''क्यों मार खायेंगे हम लोग? कोई कर्ज खाया है क्या? कर्ज भी खाया है तो चुका देंगे। पर नहीं खाएँगे मार। मारो–हो–मारो। हम कोई मौगा हैं क्या?''[2] इस तरह दलित आम आदमीयों पर अत्याचार किए जात हैं। दलित कहानियों का आम आदमी पीड़ीत शोषीत होने के बावजूद भी उसमें सुधारवादी दृष्टिकोण भी दिखाई देता है। जयप्रकाश कर्दम जी की कहानी 'नो बार' कहानी में जब कहानी का नायक राजेश लड़की देखने को आता है तब लड़की के पिता उसे कहते है– ''देखिए राजेश जी हम बड़े खुले विचारों के आदमी हैं। हम जाति–पाँति, धर्म–संप्रदाय किसी प्रकार के बंधन को नहीं मानते। ये सब तों पिछड़ेपन का प्रतीक दर्शाते हैं। हमारे परिवार में जितनी भी शादियाँ हुई हैं वे सब अंतर्जातीय हुई हैं।''[3] दलित समाज पिछडा होते हुए भी उन लोगों का समाज सुधारवादी विचार हमें इस कहानी में दिखाई देता है।

आटे सने हाथ इस कहानी में डॉ. कुसुम वियोगी जी आम दलित मजदुरों की पीड़ा को चित्रित करते हुए कहती है– ''न कोई खेती न कोई बाड़ी करम की रेखा तिरछी आड़ी न कोई मोल न कोई तोल सबके हिस्से पीड़ा' अनमोल गाँव की मजदूरी' श्रमिकों की मजबूरी, मशक्कत पूरी मजदूरी अधूरी।''[4] जिनके पास खेती नहीं है वह गाँव के मजदूर झुग्गीयों में रहकर मजदुरी करते हुए अपना जीवन यापन करते हुए विषमता की जिंदगी का शिकार होकर अपनी जिंदगी काटते है। प्रेमचंद की कहानी 'ठाकूर का कुआँ' में जोखू गंदा बदबुदार पानी पीने से बीमार पड़ जाता है। वह दलित है इसलिए साहुकार ठाकुर के कुएँ से अपनी पत्नी को पानी लाने से मना करते हुए दिखाई देता है। वह कहता है– ''हाथ–पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राहमण–देवता आशीर्वाद देगे, ठाकूर लाठी मारेंगे, साहुजी एक के पाँच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुसार पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी' भरने देंगे?''[5] इस प्रकार दलितों पर अन्याय किया जाता है। सुनिता कहानी में नायिका सुनिता दलित होते हुए पढ़ती है। इसलिए स्कूल आते–जाते समय उसे सवर्ण लड़के तथा लोग व्यंग्य करते हुए कहते है– ''चमारी पढ़–लिखकर अफसर बनेगी। गाँव में बड़ी, जाति के लोग तो लड़कियों को पढ़ाना जरुरी नहीं समझते, पर छेदा चमार को अपनी औकार का शायद पता नहीं है।''[6] इस तरह से दलित लड़कियों को या महिलाओं को शिक्षा लेने से दूर किया जाता है। शिक्षा से लोग प्रगती करना चाहते है लेकिन दलित समाज में इस तरह शिक्षा लेनेवाले को परेशान किया जाता है। 'जीवन साथी' कहानी में पुलिस स्टेशन के हेड कॉन्स्टेबल दलितों को पुलिस स्टेशन आने पर किस प्रकार से सवाल पूछ–पूछकर तथा गालियाँ देकर, परेशान

करते है इसको बहुत अच्छी तरह स्पश्ट किया है। कॉन्स्टेबल कहता है– ''ओह अछूत हो...उस पर इतनी ऐंठ। जाओ...कोई रिपोर्ट नहीं लिखी जाएगी। तुम अछूतों के दिमाग खराब हो गए हैं। सरकार ने तुम लोगों को सिर पर चढ़ा रखा है। भागो यहाँ से।''[7] इस तरह से दलित लोगों का सरकारी कार्यालयों में भी शोषण किया जाता है।

समाज में सब जातियों को दूर रखते हुए मनुष्य को केवल इन्सानियत की दृष्टि से देखनेवाली और रखनेवाली केवल इन्सानियत और मानसिकता ही एकमेव पहचान होनी चाहिए। लेकीन यह न होते हुए लोग आज वर्तमान समय में भी भेदभाव करते हुए दिखाई देते है। हिंदी दलित कहानियों में वातावरण चाहे कही का भी हो दलितों पर अन्याय, अत्याचार तथा शोषण कम नहीं दिखाई देता। ग्रामीण, आँचल में खुले आम है तो शहरी वातावरण में छुपा भेदभाव दिखाई देता है। इसलिए मुझे लगता आज के समय में इसमें बदलाव लाना बहुत आवश्यक है।

संदर्भ

1. मिश्र, रामदरश. हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान. पृष्ठ **37.**
2. गुप्ता, रमणिका. परनाम नेताईन जी।
3. कर्दम, जयप्रकाश. नो–बार।
4. वियोगी, डॉ. कुसुम. समकालीन दलित कहानियाँ पृष्ठ **25.**
5. प्रेमचंद. ठाकूर का कुआँ– (कहानी संकलन काले हाशिये पर), पृष्ठ **17.**
6. सुनिता. मीनू रजतरानी (कहानी संकलन–दलित महिला कथाकारों की चर्चित कहानियाँ), पृष्ठ **37.**
7. कपाडियाँ, प्रेम. जीवनसाथी– (कहानी संकलन– समकालीन दलित कहानियाँ), पृष्ठ **84.**